## कृपाराम

इनका रचना काल सं. 1864 के आसपास है। ये जोधपुर राज्य के गाँव खराड़ी के निवासी खिडियाशाखा के चारण थे। इनके पिता का नाम जगराम था। बड़े होने पर ये सीकर के रावराजा लक्ष्मणसिंह के पास चले गए और अन्तसमय तक वहीं रहे। इनको ढाणी गाँव मिला जो 'कृपाराम की ढाणी' के नाम से मशहूर है।

राजिया के नाम से जो सोरठे राजस्थान में प्रचलित हैं वे कृपाराम के बनाए हुए हैं। राजिया इनका नौकर था। उसी को संबोधित करके ये सोरठे कहे गए हैं।

कृपाराम रचित इन सोरठों की संख्या 175 के लगभग है। इनमें नीति और उपदेश की बातें कही गई हैं। भाषा इनकी डिंगल है। प्रसाद गुण युक्त होने से अनपढ़ लोग भी इन सोरठों का मर्म समझ लेते हैं और बात-बात में इनका प्रयोग करते हैं।

कहा जाता है कि फुटकर सोरठों के अतिरिक्त कृपाराम ने 'चालक नेसी' नामक एक नाटक और अलंकारों का एक ग्रंथ भी बनाया था। परन्तु इनका पता नहीं लगता। राजिया के कुछ सोरठे यहाँ दिए जाते हैं—

**कारज सरै न कोय, बळ प्राक्रम हीमत बिना।**
**हलकारयाँ की होय, रंग्या स्याळाँ राजिया॥**

(बल, पराक्रम और हिम्मत के बिना कोई काम पूरा नहीं हो सकता। हे राजिया! रंगे हुए सियारों को हिम्मत दिलाने से क्या हो सकता है?)

**काळी भोत कुरूप कसतूरी काँटे तुलै।**
**साकर बड़ी सरूप रोड़ाँ तूलै राजिया॥**

(कस्तूरी बहुत काली और बदसूरत होती है पर काँटे पर तोली जाती है। परन्तु हे राजिया! शक्कर बहुत सुन्दर होने पर भी पत्थरों के बराबर तोली जाती है।)

Scanned by CamScanner

**गहभरियौ गजराज, मदछकियौ चालै मतै।**
**कूकरिया बेकाज, रोय भुसै क्यूँ राजिया॥**

(गंभीर हाथी मद मस्त होकर अपनी मौज से चला जा रहा है। हे राजिया! कुत्ते क्यों रो-रोकर भौंकते हैं?)

**गण-औगण जिण गाँव, सुणै न कोई साँभळै।**
**मच्छगळागळ माँय, रहणो मुसकल राजिया॥**

(जिस गाँव में गुण-अवगुण को सुनने व समझने वाला कोई नहीं है और जहाँ अराजकता फैली हुई है, हे राजिया! वहाँ रहना कठिन है।)

**पाटा पीड़ उपाव, तन लागाँ तरवारियाँ।**
**बहै जीभ रा घाव, रती न ओषद राजिया॥**

(शरीर में तलवारों के घाव लगने पर पट्टी द्वारा उसकी पीड़ा का इलाज हो सकता है। पर हे राजिया! जीभ के घावों की रत्ती भर भी दवा नहीं है।)

**मुख ऊपर मीठास, घट माँही खोटा घड़ै।**
**इसड़ा सूँ इखळास, राखीजै नहँ राजियाँ॥**

(मुंह से मीठे बोलते हैं पर हृदय से बुराई करते रहेते हैं। हे राजिया! ऐसे लोगों से कभी संपर्क नहीं रखना चाहिए।)

**मूसा नै मंजार, हितकर बैठा हेकठा।**
**सौ जाणै संसार, रस नहँ रहसी राजिया॥**

(चूहा और बिल्ली प्रेम पूर्वक एक साथ बैठे हुए हैं। परन्तु हे राजिया! सारा संसार जानता है कि यह प्रेम रहने का नहीं है।)

**लावा तीतर लार, हर कोई हाका करैं।**
**सिंघाँ तणौ सिकार, रमणौ मुसकल राजिया॥**

(लवा और तीतर के पीछे प्रत्येक आदमी हाँक लगा सकता है। परन्तु हे राजिया! सिंहों का शिकार करना कठिन हैं।)

**रोटी चरखौ राम, इतरौ मुतलब आप रो।**
**की डोकरियाँ काम, राज कथा सूँ राजिया॥**

(रोटी, चरखा और राम इन बातों से बुढ़ियाओं का मतलब होना चाहिए। हे राजिया! राजनीति से उन्हें क्या मतलब?)

Scanned by CamScanner